एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मशरूम की खेती : उद्यमिता व रोजगार का सुनहरा अवसर

(*रामराज प्रजापत, नरेश कुमार कुमावत एवं आत्मा राम मीना)
शोधार्थी, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान- 334006
* ramrajprajapat555@gmail.com

आज के समय में परंपरागत खेती से किसानों की आय में लगातार गिरावट आ रही है। किसानों को साल–दर–साल सुनिश्चित आय मिले, इसके लिए कृषि में विविधीकरण की आवश्यकता है, अर्थात विभिन्न प्रकार की खेती करने की आवश्यकता है। विभिन्न विकल्पों में से एक मशरूम की खेती करना है, जिसे पुवाल व अन्य कृषि अपशिष्टों पर उगाया जा सकता है।

पौधों के विपरीत, मशरूम की खेती एक इनडोर गतिविधि है। प्राकृतिक परिस्थितियों में मशरूम को एक विशेष मौसम में उगाना सभंव है, परन्तु नियंत्रित परिस्थितियों में मशरूम को पूरे वर्ष–भर आसानी से उगाया जा सकता है। इसके अलावा मशरूम उगाने के लिए बहुत कम भूमि की आवश्यकता होती है। इसकी खेती अब ग्रामीण क्षेत्रो में स्वरोजगार का साधन बनती जा रही है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रो में मशरूम की खेती युवाओं, महिलाओं, भूमिहीन लोगों के लिए एक महत्वर्पूण गतिविधि के रूप में उभरी हैं। गुणवत्तापूर्ण खाघ पदार्थों की मांग को देखते हुए मशरूम की खेती एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में उभर रही है। नियंत्रित परिस्थितियों में मशरूम उगाने वाली कई व्यवसायिक इकाइयाँ भी हमारे देश के विभिन्न भागो में स्थापित की गई है।

आपने देखा होगा कि बारिश के बाद खासकर घास के मैदान में, खाद के ढेर के पास, गोबर या सडे हुए पुवाल व लकडी में मशरूम उगी हुई दिखाई देती है। हमें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि प्रकृति में पाये जाने वाले सभी मशरूम खाने योग्य नही होते हैं। कुछ मशरूम जहरीले होते है व कुछ औषधिय महत्व के होते है। खाद्य मशरूम खाने में बहुत ही स्वादिष्ट, पौष्टिक व औषधिय होती है।

खाद्य मशरूम के प्रकार–

1 बटन मशरूम, 2 ऑयस्टर मशरूम, 3 शिटाकी मशरूम, 4 धान का पुवाल मशरूम

मशरूम की खेती के लिए बुनियादी जरूरतें–

- श्रमशक्ति
- मशरूम कल्चर
- पाश्चुराइजेशन चेम्बर / इनोक्युलेशन बॉक्श
- फ्रिज / कूल रूम

मशरूम के सेवन की विशेषताएं एवं लाभ–

विशेषताएं	लाभ
उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन	कुपोषण को खत्म करता है
कम सोडियम व उच्च पोटेशियम	उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है
कोई स्टार्च व शर्करा नही	मधुमेह रोगियों के लिए लाभकारी
कोई कोलेस्ट्रॉल नही	स्वस्थ हृदय
सेलेनियम	कैंसर रोधी गुण

मशरूम की खेती से आय–व्यय–

मशरूम की मौसमी खेती एक विशिष्ट क्षेत्र में छोटे–छोटे शेड बनाकर की जाती है। यहा शेड का आकार 30′ x 60′ है। मशरूम की खेती करने के लिए आय–व्यय का अनुमानित ब्यौरा निम्नलिखित है।
यह रिर्पोट एग्री फार्मिंग में प्रकाशित मशरूम फार्मिंग प्रोजेक्ट रिर्पोट से लिया गया है। https://www.agrifarming.in/mushroom-farming-project-report-cost-and-profit-analysis.

मशरूम की खेती की लागत का ब्यौरा–

सामग्री	मात्रा	कीमत (रू.)/युनिट	कुल लागत (रू.)
बम्बू पोल (लम्बाई 12′ व चौडाई 3′′)	100	120	12000
बम्बू पोल (लम्बाई 10′ व चौडाई 2.5′′)	220	110	23200
बम्बू पोल (लम्बाई 10′ व चौडाई 1′′)	280	100	28000
चावल का भूसा	1 टन	4500	4500
सूतली	10 किग्रा	300	3000
पोलीथीन शीट	35 किग्रा	180	6300
गेहूँ का भूसा व छिलका	6000 + 300 किग्रा	5 + 15	34500
मुर्गी की खाद	3600 किग्रा	2	7200
युरिया	140 किग्रा	10	1400
सुरजमुखी खल	480 किग्रा	15	7200
जिप्सम	1000 किग्रा	9	9000
सामग्री की कुल लागत			**136300**

- ❖ कासींग मृदा 2000 किलोग्राम @ रू. 2.5 / किलोग्राम = 2000 X 2.5 = रू. 5000
- ❖ 100 किलोग्राम स्पॉन @ रू. 70 / किलोग्राम लागत = 100 X 70 = रू. 7000
- ❖ 6 मजदूर की लागत @ रू.300 / दिन केवल 15 दिन के लिए = रू. 30000
- ❖ मशरूम फार्म की कुल लागत = (136300 + 5000 + 7000 + 30000) = रू.178300
- ❖ मशरूम फार्म का कुल उत्पादन = 3000 किलोग्राम
- ❖ कुल आय = रू.100 / किलोग्राम = 3000 X 100 = रू. 300000
- ❖ मशरूम फार्म से शुद्ध आय = 300000 – 178300 = रू. 121700

भारत में मशरूम की मांग में लगातार वृद्धि हो रही है इसे देखते हुए मशरूम के बड़े पैमाने पर उत्पादन की आवश्यकता है। हालांकि अब गाांव ही नही शहरों में भी शिक्षित युवा मशरूम उत्पादन को करियर के रूप में अपनाने लगे है। केंद्र और राज्य सरकार की ओर से सभी लोकल को वोकल बनाने पर बल दिया जा रहा है। साथ ही हर तरफ आत्मनिर्भर भारत अभियान की चर्चा हो रही है ताकि लोग न केवल स्वयं रोजगार सृजन कर सकें बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे सकें। मशरूम की खेती दो से तीन महीनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। अतः किसान मशरूम की चार फसल लेकर वर्षभर रोजगार प्राप्त कर सकता है।

अतः मशरूम की खेती किसान व उसके परिवार के लिए पोषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ–साथ आय व रोजगार का अच्छा स्रोत भी है। किसान मशरूम को सीधे उपभोक्ताओं या विक्रेताओं को बेच सकते है। होटल व रेस्टोरेन्टों में अधिक मांग होने के कारण दाम भी अच्छा मिल जाता है। मशरूम की कीमतें मौसम और इसके प्रकार पर निर्भर करती है। कृषि विभाग द्वारा समय–समय पर युवाओं, महिलाओं तथा भूमिहीन किसानों को इसका प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा मशरूम का बीज भी अनुदान पर किसानों को उपलब्ध कराया जाता है।